मासिक—

मानव मन्दिर

सम्पादक :

एम० आर० भक्त
पी. एस. ई. (रीटायर्ड)

वर्ष 8	सोमवार 11 मई 1981	संख्या 1

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज, मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक 21-12-1980

दोस्नी, भाईयो ! संतों की शिक्षा को स्पष्ट कर देने के विचार से यह मुसीवत बुढ़ापे में सिर पर मोल लेता हूं। काश ! मैंने यह प्रण न किया होता कि अपना अनुभव कह जाऊंगा तो इस संकट में न फंसता। जो कुछ मैंने इन संतों के शब्दों का अर्थ समझा है वह और है या जो आम जनता समझती है या जो मैं पहले समझता था वह और है। दाता दयाल जी ने उस मालिक को मिलने के लिए मुझे यह संतमत दिया था। आज आपको कबीर साहिब का

शब्द सुनाता हूं जिसमें वह कहते हैं कि मालिक तुम्हारे अन्तर में है :—

कर नैनों दीदार महल में प्यारा है।
छिमा सत धारो, काम क्रोध मद लोभ विसारो,
शील संतोष मद्ध मांस मिथ्या तजि डारो,
हो ज्ञान घोड़े असवार, भरम से न्यारा है।

अब देखो ! जो व्यक्ति उस मालिक को मिलना या अपने घर जाना चाहता है उसके लिए यह उपरिलिखित शर्त है। वह मालिक तुम्हारे अन्तर में है। मगर जब तक कोई व्यक्ति इन नियमों का अनुयायी नहीं होता, विषय, विकार, मान, मद या ग़लत मस्ती और व्यर्थ लोभ को नहीं छोड़ता, लाख प्रयत्न करने पर भी अपने घर नहीं जा सकता और न ही उस मंजिल को तय कर सकता है। लाख कोई उस गुरु को धारण करे जब तक यह शर्तें पूरी नहीं हैं उसको इस नाम के लेने का कोई लाभ नहीं।

इन शर्तों को पूरा करने के लिए आदमी को पहले किसी योग्य व्यक्ति, जो स्वयं इन चीजों से रहित हो, का सत्संग करना पड़ता है। अगर वह शर्तें तुम

में नहीं हैं तो कितना भी अभ्यास करते रहो तुम को कुछ नहीं मिलेगा। मेरे अपने साथ घटी हुई है। मैंने 1905 में नाम लिया। 1916 तक बहुत प्रयत्न किया, अभ्यास किया. सिवाय प्रेम ही प्रेम, रोने पीटने के कुछ नहीं मिला। यह क्यों था ? क्योंकि मेरी छोटी आयु की शादी थी और गृहस्थ में फंसा हुआ था। अत: जो अधिक कामी है उसके लिए कोई नाम नहीं है :—

कामी कबहु न गुरु भजे और नाम गुरु का लेइ।

जिनका जीवन विषय-विकार का होता है उनको शान्ति नहीं मिल सकती ! वह गुरु के पीछे तो दौड़ते हैं मगर वास्तव में गुरु को नहीं भजते। नाम केवल अशान्ति को दूर करने के लिए लेते हैं। इसलिए आवश्यक है कि पहले इन्सान शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य पर काबू रखे। यही भेद है जो मैं बताये जाता हूं कि जिन भक्तों को, जो बहुत गुरुओं के पीछे या परमात्मा के पीछे दौड़ते हुए तुम देखते हो वे हैं जिनके मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य गिरे हुए होते हैं। यह वह भेद है जो आज तक किसी

ने नहीं खोला। मैं खोल रहा हूं। यह मेरा अपने जीवन का तथा दूसरे सत्संगियों के जीवन का अनुभव है। इसलिए मैं कहता हूं कि पहले तुम अपने बच्चों के चरित्र को बनाओ। मगर मां-बाप जो आप ही गिरे होते हैं वे बच्चों को क्या सम्भालेंगे। मेरी बात को सोच लो। मैं अपनी कमाई सिवाय रोटी कपड़े के सारी की सारी अज्ञान के वश में आकर दाता दयाल को भेजता रहा। क्यों भेजता रहा ? क्योंकि मेरा ब्रह्मचर्य गिरा हुआ था। मन अशान्त था और सहारा चाहता था। मगर 1919 के बाद जब मुझे सत्यता का पता लग गया मैंने जो दिया, प्रसन्नता से दिया। तो संतों का प्रकट होना केवल पापियों के लिए है। जो गिरे हुए व्यक्ति हैं संत उनके लिए आते हैं, जो नेक हैं उनको संतों के पास क्या लेना :—

धोती, नेती, बस्ती पाओ, आसन, पदम जुगत से लाओ।
कुम्भक कर रेचक करवाओ।
पहिले मूल सुधार कारज हो सारा है।

कुम्भक- वृत्ति के स्थिर हो जाने को कहते हैं।

सबमे पहले यह शर्त बता दी कि विषय-विकार से बचो फिर ठहरो। सुमिरन इस लिए किया जाता है कि तुम्हारे चित्त की बृत्ति भ्रूमध्य में ठहर जाए। इसको कुम्भक कहते हैं। जब ध्यान करोगे, गुरु ने जो नाम तुमको बताया है उसका या गुरु के रूपका सहारा लेकर वहां ठहरने की कोशिश करो। कबीर साहिब ने इस शब्द में पिण्ड या शरीर के षट् चक्रों का व्यान किया है, मैंने इसका अभ्यास नहीं किया। जिन्होंने किया है उनमें सिद्धि शक्ति आ जाती है और वे शारीरिक शक्ति में उन्नति कर सकते हैं। संतों ने षट् चक्र छुडा दिये तथा सीधे ही भ्रूमध्य से साधन प्रारम्भ कर दिया। आगे वह कहते हैं :—

कंवलन भेद किया निर्वारा, यह सब रचना पिंड मँझारा,
सत्संग कर सतगुरु सिर धारा, वह सतनाम उचारा है।

वह कहते हैं कि इसके आगे फिर, सतगुरु सिर धारो अर्थात् सच्चा ज्ञान प्राप्त करो। संसार ने यह समझा है कि गुरु का ध्यान करना ही सतगुरु, का धारण करना है; यह ग़लत हैं। सतगुरु धारण करने का अर्थ है कि किसी गुरु के पासजाकर, उस के

पास बैठकर उसकी बातों को सुन कर, समझ कर, उस पर मनन करना है। मैंने 1905 ई. में सतगुरु धारण किया था, मगर कुछ समझ नहीं आई। दाता दयाल बहुत समझाते थे :—

फकीरा गुरु तो तेरे पास, गुरु तो तेरे पास।
तेरे मन में, तेरे तन में तेरे स्वांसों स्वांस।

मेरे दिमाग में यह समझ आती थी कि जब मैं दाता का ध्यान करता हूं तो गुरु महाराज मेरे अन्तर में आ जाते हैं। मैं इसका अर्थ यही समझता रहा, मगर मुझे अब पता लगा कि वास्तव में यह बात नहीं थी। वह जो वास्तविक गुरु है वह ज्ञान, समझ और विवेक है। मगर हम भ्रम में आकर लुट गये और प्रत्येक धर्म और पन्थ वाले ने हमको मूर्ख बनाया सत्य बात किसी ने नहीं बताई। दाता दयाल ने किताबों में तो बहुत कुछ कहा, मगर अपनी जुबान से कभी नहीं कहा कि फकीर ! मैं 1905 ई. में तेरे अन्तर में प्रकट नहीं हुआ। देखो मेरा सारा जीवन इसी एक दृश्य के सहारे अज्ञान में गया पर मैं उनको मालिक का अवतार समझ कर सारा जीवन उनके पीछे लगा

रहा । मैं बड़ी सच्चाई से बात कर रहा हूं ताकि जो जीव अधिकारी हैं, जो सच्चाई चाहते हैं उनको सीधा रास्ता बता जाऊं कि भाई मैंने तो गलतियां खाई हैं तुम न खाना :—

आंख कान मुख बन्द कराओ, अनहद शब्द सुनाओ,
दोनों मिल इक तार मिलाओ, तब देखो गुलजारा है ।

वह कहते हैं कि जब यह बात समझ में आ जाये तब अपने अन्तर मन को ठहराओ । तुम्हारे अन्तर में शब्द होते हैं । इन शब्दों की व्याख्या मैंने कई बार सत्संगों में की हुई है कि सहस्रदलकमल में क्यों घण्टा बजता है, त्रिकुटी में ओंकार क्यों बोलता हैं, सुन्न में क्यों रारंग, सारंग बजता है, महासुन्न में अंधेरा क्यों है, भंवर गुफा में बांसुरी क्यों बजती है आदि । इसको दोबारा बताने की आवश्यकता नहीं । यह क्या है ? जिस प्रकार के तुम्हारे ख्यालात व भाव हैं और जैसी मन की प्रकृति बनी हुई है, जैसे संस्कार और प्रभाव पड़े हुए हैं, जब तुम अपने अन्दर जाओगे तो वैसे ही शब्द सुनोगे और रूप देखोगे । प्रकृतियां भिन्न २ हैं । इसलिए सारे दर्जे प्रत्येक

क्या कहते हैं ? यहां हमारा अपना घर हैं। वह क्या है ? :—

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हिरदे तपन करारी,
संत दयाल जीव हितकारी, भेद कहे अब निज कर भारी।

अभिप्राय है कि इन्सान किसी बात की तलाश करता है। उसमें कोई इच्छा है संत क्या करते हैं। उसको भेद देते हैं कि भई ! तू कौन है, कहां से आया है तथा कहां जाना है। मैंने क्या समझा कि कहां से आया ? उस अवस्था से जो अनामी है अर्थात् मैं पहले ही नहीं था। एक ताकत थी उसमें शब्द हुआ तब सुरत पैदा हुई। यह मेरा अनुभव है। यही स्वामी जी ने कहा है कि आदि मे गति होने से शब्द पैदा हुआ, शब्द से सुरत, सुरत से शब्द। आपे ऐसे रचना हुई। तो हम कौन हुए ? चेतन के बुलबुले। वह बेअन्त है। उस मालिक का किसी संत, परमसंत, अवतार या ऋषि को पूरा पता नहीं लगा। ढूंढने के लिए निकले, अपनी हस्ती खो गये तो उन्होंने कह दिया वहां कुछ नहीं :—

नहिं खालिक मखलूक न खिल्कत,
कर्त्ता कारन काज न दिक्कत।

जहाँ से हम आये हैं वहां यह हालत है :—

द्रष्टा दृष्टि नहीं कुछ दरसत,
वाच लक्ष नहिं पद न पदारथ बने।

कई कहते हैं कि मैं परमात्मा को देख आया हूं। कई ऐसे धर्म हैं जो कहते हैं हम खुदा को दिखा देते हैं। स्वामी जी कहते हैं कि वहां न द्रष्टा है न दृश्य है। वह क्या हालत है? जो मैंने आपको कही। उदाहरणतया: जब आप गहरी नींद मैं चले जाते हो तो क्या वहां द्रष्टा या दृश्य होता है? अपनी हस्ती को गुम कर देना है। यही अन्तिम ध्येय है :—

ज़ात सिफात न अब्बल आखिर,
गुप्त न परघट बातिन जाहिर।
राम रहीम करीम न केशो,
कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो।

वह कुछ है। वहां जाकर व्यक्ति कुछ नहीं कह सकता :—

स्मृति शास्त्र न गीता भागवत,
कथा पुराण न वक्ता कीरत।

सेवक सेव न दास न स्वामी,
नहिं सत नाम न नाम अनामी।

अब देखो ! वहाँ नाम नहीं है। इसका क्या अभिप्राय है ? यह उनको पता होगा जिन्होंने वाणी लिखी है। मैंने क्या समझा। मैं चलता चलता जब वहां जाता हूं जहां अपनी हस्ती या अपनापन खो जाता हूं। पीछे क्या रहता है। खेद ! शब्द नहीं मिलते।

एक Supermost consciousness रहतो है। जब तक मैं शरीर में हूं मैं feel (अनुभव) करता हूं। शरीर से निकलने के बाद मेरा क्या हाल होगा मैं कह नहीं सकता। तो जो कुछ मेरे अनुभव में आया है या अनुभव हुया है वही राधास्वामी दयाल का है, वही कबीर साहिब का है और यही दाता दयाल ने मुझे इशारे में कहा था। मेरी समझ में नहीं आया। मैंने जो कुछ कहा इसका सबूत आप को दे दिया। पता नहीं मेरा जीवन कब तक है। मैं आपको दर्देदिल से सच्चो बात कहना चाहता हूं कि जीवन में इन्सान का विश्वास और अपना ध्यान ही उसके सभी

कार्य करता है। आपको मैं हजूर महाराज राम सालिग राम साहिब, जिन्होंने राधास्वामी मत चलाया है उनका एक शब्द सुनाता हूं :—

गुरु प्यारे का कर दीदारा घट प्रीत जमाय,
गुरु दरशन की महिमा भारी छिन में कोटिन पाप नसाय।

अब जो लोग ऐसी बाणी सुनेंगे वे क्या करेंगे ? गुरु के पीछे दौड़ेंगे, गुरु का दीदार मांगेंगे। वे इस दीदार से यह समझते हैं कि केवल बाहरी दीदार करने से उनका काम बन जाएगा। गुरु के दर्शन से उनके पाप काटे जाएंगे। अरे बाबा जब ब्राह्मणों का राज्य था तो ब्राह्मणों की गुड्डी चढ़ी, हो गया 'ब्रह्म-वाक्यं जनार्दन:" कभी मुहूर्त निकाले जाते थे। मुहूर्त न निकले तो फिर कहते कि किसी ब्राह्मण को पूछ कर चले जाओ। वह परमात्मा की आज्ञा है। अब यहां संतों का राज्य हो गया उनके दीदार करने से तुम्हारे पाप कट जाएंगे। मैं भी मानता हूं, मगर वह गुरु कौन हैं। यहां तुम भूले हुए हो। अगर यह सच्चाई मुझे राधास्वामी मत की न मिलती जो आगे शब्द में है तो चाहे मैं नर्क में जाता हूं मैं राधास्वामी मत के विरुद्ध वह जहर उगलता कि यह याद रखते :—

बिरही जन कोई जाने रोबी म जस दरपन दरस दिखाय, हिये रूप बसाय।

यह दर्पण में दर्शन, तुम्हारे गुरु का रूप जो तुम्हारे मन में है जैसे दर्पण में तुम हो, ऐसे अपने अन्तर में गुरु की मूर्ति बनाओ। वह जो दर्शन तुम अपने अन्तर करोगे वह तुम्हारे काम पूरे करेगा। केवल बाहरी गुरु के दर्शन से तुम तर नहीं सकते। मेरे शब्दों के भावार्थ को पकड़ने का प्रयत्न करो। मेरे शब्दों पर मत जाना। लोग आते हैं मैं कहता हूं ध्यान बनाओ, मांगा करो। जब मिलते हैं तो कहते है कि हमारा काम हो गया, ध्यान बन गया। जो लोग कहते हैं कि ध्यान नहीं बना और काम नहीं हुआ तो मैं कहता हूं कि मैं क्या करूं? तुम्हारा ध्यान नहीं बना तो मैं सिर मुण्डवाऊं। जो कुछ है तुम्हारे अपने ही विश्वास और प्रेम में है। जहां भी तुमने सिर मुण्डवाया हुआ है, उस रूप को जो तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है, उसको पूर्ण मानो। अपने अन्तर में उसकी मूर्ति बनाकर, ध्यान लगाकर मांगो, अगर न मिले तो मुझे जो इच्छा हो कहो। जो कुछ है तुम्हारे अपने अन्तर में है। जो अन्तर में गुरु

का दीदार करते हैं उनको सब कुछ मिलता है। बाहरी दर्शन का इतना ही लाभ है। बाहरी गुरु की भक्ति जरूरी है। और यह वह भक्ति है जो तुम इस समय कर रहे हो :—

दर्शन करे वचन पुनि सुने,
सुन सुन सुनकर नित मन में गुने,
गुन गुन कड़ ले तिस सारा,
कड़ सार करे अहारा,
कर अहार पुष्ट हुआ भाई,
जग भव भय सब गई भगाई।

तुम जो सत्संग इस समय सुन रहे हो, वशर्ते यह कि यह गुरु भक्ति कर रहे हो, वशर्ते कि तुम्हारा ध्यान मेरी शक्ल या वाणी की तरफ है, यही गुरु भक्ति है। शेष जो लेना देना है यह सांसारिक व्यवहार है :—

ऐसी लगन जो लगावें जन,
छिन छिन रहे गुरु चरन समाय।
घट आनन्द पाय।

अब देखो, उन्होंने बाहरी गुरु के चरणों को तो नहीं कहा। संसार भूल गया। यह वाणियां रोचक हैं। इस रोचकपने ने दुनिया को पागल बना दिया। अब वह जो पहली कड़ी को सुन कर अधूरा अर्थ

समझे वह क्या करेगा ? वह समझेगा कि गुरु के दर्शन करने से सारे पाप नष्ट हो गये । मैंने इस कर्मो को देखा । इसलिए यह सिर खपा रहा हूं :—

चरण भेद लें मूरत चढ़ावैं, दरशन रस ले रहे त्रिप्ताय,
धुन शब्द सुनायें।
मेहर करैं गुरु राधास्वामी प्यारे, एक दिक लें निज चरन लगाय।
धुर घर पहुंचाय।

अब कौन सा गुरु दया करेगा ? ऐ इन्सान ! अगर तेरी आत्मा सच्ची है और तू सच्चे मन से जाना चाहता है तब तू वहां जायेगा । बाहरी गुरु लाख तुमको आशीर्वाद दे तुम नहीं जाओगे । वह राधास्वामी दयाल दया करने वाला है । ऐ इन्सान ! तेरी अपनी ज़ात है । तू आप ही अपने ऊपर दया करेगा । अगर तू आप चाहता है कि तू इस चक्कर से निकल जाये तो तू निकल जायेगा । किसी ने नहीं निकालना । यह सच्चाई है जो मैंने अपने जीवन में समझी । ऐ मित्रो ! जीवन सच्चाई की तलाश में गुजरा । ऐ इन्सान ! तेरा अपना ही विश्वास, श्रद्धा, यकसूई और कर्म तेरी सहायता करता है । अगर कोई सहायता करने वाला है तो वह घट घट का वासी है । फकीर चन्द

न कहीं किसी की सहायता करने जाता है न ऐसे झूठे गुरुमत का हामी है। मैंने ज्ञान, दाता और सत्यवक्ता बन कर बड़ी निर्भयता से यह सच्चाई बतायी है कि जो अधिकारी हों वे लाभ उठा लें।

इस गुरु और मालिक के रूप की गलत समझ ने इन्सानी नसल को बांट दिया और संसार धर्मों और पन्थों में बंट गया। संत इसीलिए संसार में आते हैं कि Unity of Religion and unity of humanity हो जाए। और संतमत जो शिक्षा देता है यानि जो कबीर साहिब, नानक साहिब और राधास्वामी दयाल देगये या मैं देता हूं, इसके बिना मानव कल्याण नहीं हो सकता, नहीं हो सकता, नहीं हो सकता। सरकार जितना चाहे प्रयत्न कर ले। अतः मैंने इन्सान बनो की आवाज उठाई है कि ऐ इन्सान! जान कि तू कहां से आया है। एक तत्व है उसमें सब प्रकट हुए हैं। तुम्हारे अन्दर एक अहंभाव आ गया है। इस अहं ने सब को पागल किया हुआ है। सच्चाई को जान।

नकल पत्र जो परम दयाल जी महाराज ने श्री कुबेर नाथ को लिखा।

कुबेर नाथ,

राधास्वामी !

आपका दाता दयाल की जीवनी पर उर्दू में विषय मिला। उनकी आधी किताब छप चुकी है। अत: उस किताब में देना तो मुश्किल है। अगर आप हिन्दी करके भेज दें तो मैं 'मानव मन्दिर' में छपवा दूंगा। उर्दू जो है यह आनन्दराव के आने पर उनको कहूंगा कि वह 'रसाला दयाल' में छपवा दें।

कुबेर ! अलविदा। मेरे जीवन का लगभग काम समाप्त है। दाता ने कहा था शिक्षा बदल जाना, वह बदल चला। मालूम नहीं जो कुछ मैंने किया ठीक है या ग़लत। अगर मैंने जो कुछ किया

आत्मानुभूति

दुर्गा दास 'चमन

१. जड़ व चेतन दोनों एक वस्तु के ही दो रूप हैं इन्हें दो कहने वाले अहंकार या अज्ञान रूपी कारण वृद्धि के आधीन हैं। इसी भ्रान्ति से काल और दयाल दोनों अनन्त चेतना के ही रूप हैं, इन्हें जुदा मानना भी अहंकार को स्पष्ट करना ही है। आत्म द्रष्टा इन को समता की दृष्टि में ला कर परमात्मा का व्यवहार करता है।

२. एक दिन सामने जब वृक्षों व नदी की बड़ी-बड़ी चट्टानों पर आत्मनिरीक्षण किया गया तो अनन्त द्वारा निर्णय हुआ कि यह जड़ रूप प्रकृति बनती है व टूटती है, वृक्षों को काटा जाता है। वह स्वयं प्रकृति की गोद में अपने आपको छोड़े हुए हैं। प्रकृति पुनः उन का पालन पोषण व संहार करती है। इसी प्रकार से ब्रह्मनिष्ठ योगी या आत्मसमर्पित महात्मा या सन्त शरीर पर कष्ट आने पर उस की ओर बहुत कम ध्यान देता है अथवा प्रकृति माता या सद्गुरु पर विश्वास कर के अडोल रहता है।

जो अधिक सहारा ले रहा है वह अभी पूर्ण नहीं हुआ। उस के गिरने का भय बना है।

३. चट्टान पर बैठे हुए वायु का प्रवाह कभी दक्षिण से कभी उत्तर से हो रहा था। निर्णय दिया गया कि यह सब उस अनन्त के आधीन है। फिर आत्म-निरीक्षण करने में लगे हुए योगी को भी तन, मन धन उसी के आधीन कर देना चाहिए। वह शक्ति उस महापुरुष का योगक्षेम स्वयं सभाल लेगी और आप उस से कार्य करवाएगी, यह परम लक्ष्य, परम शान्ति व परम साधन है।

४. परम चेतन, शुद्ध शब्द, सद्गुरु दीन दयाल ने निर्णय करवाया कि यदि किसी जिज्ञासु को सत्यता की तीव्र इच्छा हो या कोई पुरुष सत्य के आगे पूर्ण समर्पित हो तो उसे ब्रह्माण्डी मन के शब्द व दृश्य नहीं आयेंगे चाहे उस का देहधारी गुरु भी क्यों नऐसा चाहता हो क्योंकि वह जिज्ञासु कारण व महाकारण से ऊपर परम चेतन में लक्ष्य को स्थिर किए हुए है। अत: निचले दर्जे कोई प्रभाव नहीं डाल सकते। उस की चेतनता ने परम लक्ष्य को ही गुरु मान रखा

INCOME

DONATIONS RECEIVED BY CASH

1.	H. H. Paramdayalji Maharaj	20-00
2.	Shri Anand Rao Ji Maharaj	21-00
3.	Late Lro Gowrishetty Venkataiah Through his son G. Tirupathi, K'nagar	700-00
4.	Siddulu Rajesham, K'nagar	500-00
5.	Shankariah, Vemulavada	300-00
6.	C. Ramchandji, Sec-bad.	1,000-00
7.	Shri. Dwarkadas, Delhi	20-00
8.	Shri Chandi bazar mayee	100-00
9.	Pitlam Sathsnaghis	101-00
10.	Shri Jogi Rao Naidu, Secunderabad.	100-00
11.	Box Collection	870-00
12.	Shri B. Meghraj Secunderabad.	237-00
		3969-00

Donation Received in Kind

1. Shri Vasudev Reddy. Attapnr, Hyderabad I bag rice & fuels.
2. Shri Ramchandji Shamiana & Stage & I cot for Shri Parmadayalji Maharaj.
3. Shri Kotha Pentaiah, Secunderabad-10 kg. Dalda.
4. Gandu Pandu Rao & Buchiah Secunderabad, rent of Kapu Sangam Rs. 288/- One tin sweet oil & One tin of Kerosen Oil.
5. Shri G. Lingareddy, Nancherala, 50 kg Rice & 1kg Ghee.
6. Shri Ram Singh, Secunderabad, Loud Speaker.
7. Shri Kishanlal Mehra, Motor Cars.
8. Late Shivnarayanji, Motimahal Hotel, through his son, supplied required quautity of Milk.

3969-00

ENDORSEMENT

We the under Signed Person have gone through the Statement ef Income and Expenditure. Checked and verified the Accounts and have come to the conclusion that the Ineome and Expenditure Are true and correct :—

1.	Shri Anand Rao Ji Maharaj	*Founder*
2.	Shri Amanabolu Hanumanth Rao	*President*
3.	Shri C. Ram Chand Ji	*Member*
4.	Shri Heeralal Malani	*Member*
5.	Shri D. Sathaiah	*Member*

P. M. Arora & Co.

CHARTERED ACCOUNTANTS

Previous Year	Expenditure	Amount
1,611-08	To Satsang Expenses	
6,063-84	To Langar Expenses	
— —	To Freight & Cartage	
918-00	To Salaries & Wages	
194-80	To Postage & Telegrams	
97-59	To Printing & Stationary	
1.187-20	To Conveyance & Travelling	
3-00	To Electricity Expenses	
385-22	To Miscellaneous Expenses	
454-00	To Charity & Donation	
1-00	To Bank Charges	
	To Repair & Maintenance	175-65
	Books	100-99
5-35	Others	
2400-00	To Rent & Taxes	
270-00	To Advertisement & Publicity	
5-35	To News Papers & Periodcals	
40-00	To Subscription	
1,672-47	To Depreciation	
	Furniture & Fixture	120-00
	Fans	21-88
	Electricity Installation	15-35
	Library Books	507-22
	Casse tts Tapes	570-67
	Movies Films & Photoes	176-25
	Movies Projector	65-60
	Utensils & Crocry	142-60
9.654-59	To Excess of Income over expenditure	
21,7963-69	Total Rs.	

E DAYAL MANAVTA PRACHARAK SABHA (Regd) NEW DELHI

Income & Expenditures Account for the Year Ending 31sr December 1980.

evious	14,800-50	Income		Amount
Year		By Donation		17,469-85
,431-70		By Membership &		
		Subscription		
,685-38		Ordinary Members	962-00	
18-75	991-00	Life Members	101-00	1,063-00
,884-00	404-00	By Carity receiued		4,425-00
		By Interest on		2,570-44
173-70	4,473-00	Bank Deposits		32-00
		By Miscellaneous		
513-11	1,277-64	Receipt		
,229-85	17-90			
200-90				
347-00				
6-50				
276-64				
,400-00				
204-12				
804-00				
619-57				
489-07				
5,560-29	21,963-59	Total Rs.		25,560-29

As per onr raport attacbed of even date,

For P.M. ARORA & Co.

Chartered Accountants.

President **Secretary** **Treasure**

Nand Lal

कर्म भोग

मेरे साहित्य को पढ़ने वालो! कुछ कहना चाहता हूं। मैंने जीवन भर किसी चीज़ की तलाश के प्रभावाधीन बड़ी सच्चाई से काम किया। प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज का आदेश था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। आज 43 साल से मैं यह काम कर रहा हूं। मुझे यह दावा नहीं कि जो कुछ मैंने समझा व अनुभव किया है यह सब लोगों को लाभ पहुंचा सकता है। मेरी अपनी कुरीद अर्थात् हार्दिक खोज को समाप्त करने के लिए मैं अपने लिए इस अनुभव को सत्य मानता हूं।

अब मैं बूढ़ा हो गया। मौज अथवा मेरे कर्मों के कारण मैं इस मानवता मन्दिर बनाने के सिलसिले में फंस गया। केवल एक खुशी है कि

इस फंसाओ में मैंने निज स्वार्थ अर्थात् धन, मान प्रतिष्ठा आदि नहीं रखा ।

मन्दिर में तीन हस्पताल हैं, शिशु स्कूल, प्रेस, लायेब्रेरी और फ्री लंगर हैं। खर्चे बहुत बढ़ गये हैं। लगभग 4500 रुपये हर महीने कर्मचारियों को वेतन दिया जाता है। 70000 रुपये की दवाइयां हस्पताल में दी गई हैं। शिशु स्कूल में बच्चों से कोई फीस नहीं ली जाती। आगे सेहत अच्छी थी तो बाहर दौरा करता था। कुछ तो सच्चाई ब्यान करने का अपना कर्तव्य पूरा करता था और कुछ मन्दिर के लिए रुपया जो कोई खुशी से देता ले आता था। अब शरीर अधिक काम नहीं कर सकता। यदि मेरा साहित्य पढ़ने वाले समझते हैं कि मेरा काम प्राय: सब अधिकारी जनता के लिए लाभदायक है, तो जो इच्छा हो मन्दिर की सेवा करें।

तमाम साहित्य जो मन्दिर से प्रकाशित होता है, डाक खर्च सहित मुफ्त जाता है। मन्दिर पुस्तकों की सूची प्रकाशित कर देता है जो चाहें मुफ्त

मंगवा कर पढ़ सकते हैं। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि जो सज्जन मेरे विचारों से सहमत हैं वे अपना जीवन क्रियात्मक बनायें। पुस्तकें या सत्संग केवल मन के भ्रम, शंकाएं दूर कर सकते हैं। यदि अमल नहीं है तो यह पढ़ना लिखना भी एक प्रकार की खुशी देगा, अमली शान्ति नहीं मिलेगी। अधिक क्या लिखूं चले चलाओ का समय है, मैंने वसीअत *(Will)* कर दी है कि मेरे बाद शर्मा दयाल जिन का पूरा नाम डाक्टर ईश्वर चन्द्र शर्मा है (जो अमेरिका में हैं) और मुन्शी राम भगत मानवता और रूहानियत का प्रचार करेंगे। मन्दिर का सारा काम ट्रस्ट वालों के अधीन है। ट्रस्ट वालों को कह चला हूं कि अगर किसी समय आर्थिक सहायता न मिलने के कारण काम न चल सके तो हस्पताल आदि बन्द कर दें, केवल प्रकाशन का काम जारी रखें। अगर यह भी न चल सके तो दाता दयाल जी महाराज का *(Statue)* धरती में गाढ़ दें और मन्दिर की सारी सम्पत्ति सरकार या किसी और संस्था को दे दें।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ। 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ। 4. ਮਾਨਵਤਾ 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਨ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਨਾਮ ਦਾਨ

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans. 2. A Word to Canadians.
3. Manvta the true religion.
4. Religious Research. 5. Weight of Soul.
6. Truth Always Wins. 7. Essence of Truth.
8. Science of God Realization.
9. True Sanatan Dharma or True Religion of Humanity. 10. JeewanMukti.
11. Art of happy living. 12. Key to Freedom.
13. Broadcast of Reality in America,
14. Yogic Philosophy of Saints,
15. Nam Dan 16. Autobiography of Faqir

हिन्दी भाषा में पुस्तकें

1) अगम का भेद। 2) कबीर साखी। 3) अनुभवसार

बन्दनम्

चरण शरण की बन्दना, नित कोइ और न काम।
गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम॥
तेरी शरनागत हुआ फिर, किसकी राखूं आस।
आस तो तेरी दया की, जग से रहूं उदास॥
रूप ध्याऊं नाम गाऊं, शब्द राता मन।
आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाग मेरा धन॥
सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरन लगाय।
पतित पापी तर गया, गुरु शरन तेरी आय॥
मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग।
राधास्वामी की दया से, भाग पूरन जाग॥

मानवला मन्दिर में अगला मासिक सतसंग
15-3-81 को होगा।

अध्याय चौथा

मानवता धर्म, चमत्कार और उनके प्रकार

मानवता धर्म सत्य के धर्म का एक सीधा रूप है। सत्य सभी धर्मों की आधारशिला है और सत्य का कभी नाश नहीं होता। संसार का कोई भी ऐसा धर्म नहीं जो सत्य को सब से ऊंचा धर्म नहीं मानता हो। अब प्रश्न उठता है कि धर्म क्या है? धर्म शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'धृ' से निकलता है, जिसका अर्थ धारण करना अथवा सहारा देना है। तत्त्व की दृष्टि से धर्म सभी वस्तुओं और जीवन का आधार है। देश, काल और कारण सभी इसी परम तत्त्व से ही निकले हैं, जिसे अलग २ धर्मों तथा दर्शनों ने अलग-अलग नाम दे दिये हैं। सन्त मत का अन्तिम रूप 'राधास्वामी मत' अथवा धर्म है, जिसे फ़कीर बाबा ने आत्मा के अनुभव के लिए अपनाया है। यदि गहन दृष्टि से देखा जाये तो

यह 'राधास्वामी मत' भी वास्तव में उसी सनातन धर्म का ही विस्तार है, जिसकी व्याख्या वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों की कथाओं, धर्मशास्त्रों, न्याय, वैशेषिक; सांख्य; योग, मीमांसा और वेदान्त में की गई है।

फ़कीर बाबा के परम गुरु श्री दाता दयाल जी महाराज ने हिन्दू धर्म के सभी पहलुओं पर हज़ारों पुस्तकें तथा लेख लिख कर यह सिद्ध किया है कि सनातन धर्म, जो कि सदा रहने वाला है उसमें और सन्त मत एवं राधास्वामी मत में कोई अन्तर नहीं है। यदि सनातन धर्म को ठीक-ठीक समझा जाय और वेदों को उस धर्म का आधार माना जाय, तो उसे वैदिक धर्म भी कहा जा सकता है। वास्तव में वेद उन आदि ऋषियों तथा सनातन सन्तों की अमर बाणी है, जिन्होने सत्य की खोज में अपने जीवन लगा दिये। किन्तु आम लोग वेदों में लिखे गए गूढ़ ज्ञान को इसलिए नहीं समझ सके क्योंकि वह प्रति दिन बोले जाने वाली सरल भाषा में नहीं लिखा गया बल्कि संस्कृत में लिखा हुआ है। यदि इसी

सनातन धर्म की पूरी खोज की जाय तो फ़कीर बाबा का यह कहना बिलकुल सत्य साबित होगा कि सन्त मत और सनातन धर्म में कोई अन्तर नहीं है।

हमारे प्राचीन ऋषियों ने योग साधना के द्वारा ब्रह्माण्ड, ईश्वर और मनुष्य को समझने का प्रयत्न किया। उन्होंने यह बताया कि मनुष्य अपने असली घर से अलग हो गया है, किन्तु वह उस परम धाम को वापिस लौट सकता है। यही ऋषियों का सनातन धर्म; इतिहास की दृष्टि से कम से कम दस हज़ार वर्ष पहले भारत जैसे विशाल देश में फैला हुआ था उस समय इसका नाम हिन्दू धर्म नहीं था। ईसा से छठी या सातवीं शताब्दी पूर्व जब कुछ ईरानी लोगों ने सिन्धु नदी के किनारे पर बसे हुए सभ्य लोगों को इस महान् धर्म पर चलते हुए देखा तो इन्हें सिन्धु नदी के किनारे पर बसने के कारण सिन्धु कहना चाहा। परन्तु 'स' को उन्होने 'ह' कह कर पुकारा इसलिए सिन्धु के स्थान पर उन्हें

वे हिन्दू कहने लगे और उनके धर्म को हिन्दू धर्म। असल में तो यह वही सनातन धर्म ही है।

इसी सनातन धर्म अथवा वैदिक धर्म में विश्व की बड़ी सुन्दर व्याख्या दी गई है और विश्व के आधार को ब्रह्म कहा गया है। ब्रह्म के निम्न-लिखित चार स्तर बताये गये हैं :—

१) अव्यय ब्रह्म अथवा अनन्त परम सत्ता,

२) अक्षर ब्रह्म अथवा कभी नाश न होने वाला तत्त्व,

३) आत्मक्षर ब्रह्म, अथवा वह पुरुष जिसमें सृष्टि को पैदा करने, पालन करने तथा संहार करने की तीन शक्तियां हैं,

४) विश्वसृट् ब्रह्म अथवा वह सर्वव्यापक शक्ति, जिससे सभी ब्रह्माण्ड, विश्व, सौर मण्डल, पृथ्वी, चन्द्र आदि पैदा हुए हैं।

ब्रह्म के पहले तीन स्तर या पाद देश और

काल से परे भी हैं और सूक्ष्म रूप से विश्व में मौजूद भी हैं। सन्तों ने विश्व में उपस्थित इन तीन स्तरों को स्थूल, सूक्ष्म और अव्याकृत कहा है। सारी सृष्टि परम तत्त्व का चौथा पाद है। इस सृष्टि में स्थूल, सूक्ष्म और कारण रूप भौतिक तत्त्व मन और प्रकाश हैं। मनुष्य में यही तीन तत्त्व उसका शरीर मन और बुद्धि हैं। मनुष्य में सुरत अथवा विशुद्ध आत्मा उस के कारण (जीवात्मा), सूक्ष्म (मन) और स्थूल (भौतिक) शरीरों का अविनाशी आधार है। व्यक्ति और विश्व का कारणात्मक शरीर अथवा प्रकाश अन्तिम समझ लिया गया है। किन्तु यह बात सत्य नहीं है। वेदों और सन्तों का दर्शन प्रकाश से भी परे जाता है और चौथे पाद को परम तत्त्व मानता है।

चमत्कारों का सम्बन्ध केवल स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीर से ही है, सुरत अथवा चौथे स्तर से नहीं। जब हमारा मन स्थूल घटनाओं को पैदा करता है, तो वह चमत्कार इसलिए लगता है, क्योंकि हमें स्थूल तत्त्व का ज्ञान नहीं होता। उदाहरण के तौर पर योग साधना से व्यक्ति को

बहुत दूर २ की घटनाओं का घर बैठे ही ज्ञान हो जाता है। उसका कारण यह है कि योग के द्वारा सूक्ष्म शरीर को भी वैज्ञानिक ढंग से प्रयोग किया जा सकता है। जो आदमी योग साधना को जानने वाला होता हैं, उसके लिए सूक्ष्म शरीर भी उसी प्रकार काम करता है जैसे कि स्थूल शरीर। इसलिए सूक्ष्म शरीर की घटनाएं उसके लिए चमत्कार नहीं मानी जायेंगी। यौगिक सिद्धियों से आम लोगों के लिए चमत्कार दिखने वाली घटनाएं तथा वरदान जैसी दिखने वाली घटनाएं वरदान नहीं होतीं, बल्कि आम घटनाओं की तरह होती हैं। परन्तु क्या हमारे जीवन का लक्ष्य, सिद्धियां प्राप्त करना अथवा लोगों को चमत्कारों से प्रभावित करना है? नहीं, हरगिज़ नहीं। हमारे जीवन का परम लक्ष्य तो उस तत्त्व को पाना है जो भौतिक, मानसिक और कारण शरीरों से परे है। उस परम तत्त्व या आधार को मनुष्य के सम्बन्ध में, सुरत और ब्रह्माण्ड के सम्बन्ध में अव्यय तथा अनामी

कहा गया है ।

इस परम आधार या परम धर्म पर पहुंचने के लिए, कुछ ऐसे नियमों का होना आवश्यक है, जिन्हें जीवन पर लागू किया जा सके। ऐसे नैतिक नियमों पर चलना धर्म कहलाता है। कर्म से सम्बन्ध रखने वाले नियम साधन धर्म कहलाते हैं, परन्तु परम तत्त्व की दृष्टि से धर्म लक्ष्य है। इसलिए धर्म शब्द का मतलब नैतिक व्यवहार और आध्यात्मिक अवस्था है ।

आध्यात्मिक अवस्था के रूप में धर्म वह स्तर है, जिसे जीवन मुक्ति कहा गया है और इस अवस्था को पूर्ण सन्त, सत्पुरुष ही पा सकता है । यह वह अवस्था है, जिसे पा कर मनुष्य सुख-दुःख, लाभ-हानि, निन्दा-स्तुति और शुभ-अशुभ के चक्कर से ऊपर उठ जाता हैं । परम सत्ता तो सब द्वन्दों से परे है । उस अवस्था को न तो एक कहा जा सकता है और न अनेक । वह तो एक प्रकार की ऐसी पूर्णता है, जिसकी व्याख्या नहीं की जा सकती । भगवद्गीता

में इस अवस्था को स्थितप्रज्ञता कहा गया है। इसका दूसरा नाम ब्राह्मी स्थिति भी है। यह अवस्था ऐसी है जिसको पा कर मनुष्य के सभी सन्देह दूर हो जाते हैं और उसे पूरी शान्ति मिलती है। इसके बिषय में भगवान् कृष्ण अर्जुन को कहते हैं, "हे अर्जुन! यह आत्मा की ऐसी स्थायी अवस्था है, जिसे पा कर मनुष्य को कोई भी भ्रम नहीं रह जाता। मृत्यु के समय व्यक्ति इसी अवस्था में स्थिर रह कर मुक्त हो जाता है"।

यदि किसी व्यक्ति ने इस ऊंची अवस्था का जीते जी अनुभव नहीं किया, उसे विदेह-मुक्ति नहीं मिल सकती। मृत्यु से पहले यह ज़रूरी है कि मनुष्य शरीर, मन और अहंकार के अनुभवों से ऊपर उठ जाय। शरीर, मन और बुद्धि के स्तरों को ही काल कहा गया है और काल की सीमा तक ही ये स्तर सच्चे हैं। किन्तु ईश्वर का सच्चा धाम इनसे परे है। वह अनन्त सत् है, अनन्त चित् है और

---

1. भगवद्गीता—अध्याय दूसरा, श्लोक 72

अनन्त आनन्द है इसलिए काल से परे है। देश, काल और कारण का ब्रह्माण्ड परम तत्त्व रूपी अनन्त समुद्र की एक बूंद पर आधारित है। यह सन्तों के उस दर्शन का निचोड़ है, जिसे फकीर बाबा ने अनुभव किया है और जिसका वह प्रचार करते हैं। उन्होंने इसकी व्याख्या सरल भाषा में की है, परन्तु व्याख्या उसी परम लक्ष्य की ही की हैं, जिसे वेदों, उपनिषदों तथा भगवद्गीता में बताया गया हैं। फ़कीर बाबा ने संस्कृत भाषा में लिखी गई व्याख्याओं का अध्ययन नहीं किया, परन्तु उनके निजी अनुभव पर आधारित व्याख्या तथा संस्कृत भाषा में लिखी गई गूढ़ व्याख्या में कोई अन्तर नहीं है। बात यह है कि सत्य तो सत्य ही है चाहे उसे दर्शन द्वारा जाना जाय, विज्ञान द्वारा जाना जाय या अनुभव द्वारा। किन्तु अन्तर केवल इतना है कि जो व्यक्ति केवल दार्शनिक और बिज्ञान की पुस्तकें पढ़ कर ही अपनी व्याख्या देते हैं, बह उस सत्य को पूरी तरह से जान नहीं पाते, जब कि अनुभव के द्वारा इस सत्य को जाना जा सकता हैं और मनुष्य जोवन मुक्ति को पा सकता है।

अधिकतर लोग भगवद्गीता, वेदों तथा उपनिषदों के सही मतलब को इसलिए नहीं समझ सकते क्योंकि उनको वह आन्तरिक अनुभव नहीं होता जिसे फ़कीर बाबा ने मानव धर्म कहा है। फ़कीर बाबा के शब्दों में "ईश्वर शक्ति का एक महान् आधार है, जिसे सत्, अलख, अगम और अनामी कहा गया है। सन्त मत का यह विचार हिन्दू सनातन धर्म से अलग नहीं है। ईश्वर की शक्ति की यही व्याख्या हिन्दू धर्म में भी मानी गई है। इन धर्मों को अलग अलग मानना सबसे बड़ी भूल इसलिए है, क्योंकि लोग शक्ति के एक ही आधार का अनुभव नहीं करते[1]"।

फ़कीर बाबा के ये शब्द बहुत गहरा अर्थ रखते हैं। ये हमें ईश्वर के सच्चे स्वरूप का वह ज्ञान देते हैं, जिसे जानकर पूरी मानव जाति धार्मिक झगड़ों से बच सकती है। वास्तव में सभी धर्मों में इसी सत्य को किसी न किसी तरीके से बताया गया है।

---

1. मानवता मन्दिर, अक्तूबर 1980, पृष्ट 16

भगवद्गोता में इसकी व्याख्या बड़े ही सुन्दर रूप से दी गई है। अर्जुन को भक्तिमार्ग का उपदेश देते हुए और ईश्वर के रूप की व्याख्या करते हुए भगवान् कृष्ण कहते हैं, "हे प्यारे अर्जुन ! मैं तुम्हें उस रहस्य को बताऊंगा जो ज्ञान और विज्ञान पर आधारित है। इस रहस्य को जान लेने के बाद तुम हर प्रकार के शुभ और अशुभ से मुक्त हो जाओगे। सत्य का यह परम ज्ञान राजविद्या कहलाता है। यह परम पवित्र और उत्तम है। इसके द्वारा सफलता मिलती है। यह सनातन धर्म है, जिसका अभ्यास करना ज़रूरी है। यह सम्पूर्ण सत्ता या तत्त्व मुझ पर ही आधारित है और मैं अव्यक्त रूप हूँ। सभी भूत मुझ पर निर्भर हैं, किन्तु मैं उन पर निर्भर नहीं हूं और न ही उनमें स्थित हूं।

सभी भूत मेरे में स्थित नहीं हैं (क्योंकि वे ईश्वर के विचार के आकार में हैं)। तुम मेरे इस योग की शक्ति को देखो कि मैं सभी भूतों का आधार भी हूं, उनको धारण भी करता हूं और फिर भी मेरी

वास्तविक सत्ता भूतों में स्थित नहीं है"।

भगवद्गीता की यह व्याख्या यह प्रश्न पैदा कर सकती है कि जब ईश्वर सर्वव्यापी हैं, तो यह कैसे कहा जा सकता है कि वह भूतों में नहीं है। एक ओर तो यह कहा गया है कि सभी भूत ईश्वर से उत्पन्न हुए हैं और दूसरी ओर यह बताया गया है कि ईश्वर उनमें नहीं है। यदि हम इस गूढ़ सत्य को समझ जायें तो हम तथाकथित चमत्कारों के भ्रम से मुक्त हो सकते हैं और सच्चे ईश्वर को प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार हम जीते जी द्वन्द्व के दुःखों से बच सकते हैं। इस सम्बन्ध में फकीर बाबा द्वारा दी गई सरल व्याख्या इस प्रकार है। "इसलिए ईश्वर शक्ति का वह एकमात्र स्रोत है, जिसे सतलोक, अलख और अगम कहा जाता है। यह सारा विश्व उसी का ही खेल है, किन्तु वह स्वयं इस खेल से अलग है।" इस अलगाव की व्याख्या करने के लिए फकीर बाबा बिजली की शक्ति और उसकी धार या करण्ट का उदाहरण देते हैं। उनके शब्दों में, "मैं बैट्री का उदाहरण देता हूं, जिसमें

1. भगवद्गीता, अध्याय नौवां, श्लोक 1—4

बिजली की शक्ति और करण्ट होती है। एक करण्ट शक्ति की बोल्टेज से आती है। हम उस एक करण्ट से बहुत सी और धारें ले सकते हैं। तारों के द्वारा उसी एक करण्ट को अलग अलग लाईनों में सात या आठ सौ मीलों तक पहुंचाया जा सकता है। भाखरा डैम से एक करण्ट चलती है, जिसके द्वारा हर जगह हज़ारों पंखे, मशीनें तथा कारखाने चलते हैं। इसी प्रकार हमारी शक्ति का भी एकमात्र आधार सतलोक अथवा अगमलोक है। उससे जो करण्ट निकलती है वह काल है। आजकल का विज्ञान इस नतीजे पर पहुंचा हैं कि सारा विश्व एक प्रकार की शक्ति है। यह शक्ति एक प्रकार की बिजली है। मैंने एक पुस्तक पढ़ी थी, जिसमें लिखा था कि मनुष्य के शरीर में इतनी बिजली होती है कि जिसके द्वारा एक पूरे शहर को रौशनी दी जा सकती है। जब बिजली समाप्त हो जाती हैं तो व्यक्ति मर जाता है।

विश्व के हर एक भाग में अलग अलग करण्ट हैं। विश्व में जिस वस्तु की उत्पत्ति हुई है, वह नष्ट हो

जायेगो। जो विचार आपके मन में पैदा होता है वह कुछ समय ठहरने के पश्चात् नष्ट हो जाता है। इस ब्रह्माण्ड में कोई भी वस्तु सदा के लिए स्थिर नहीं रहेगी, किन्तु वह सत् जो अलख और अगम हैं सदैव रहेगा। जिस प्रकार करण्ट के समाप्त हो जाने पर, पंखा बन्द हो जाता है, परन्तु फिर भी इलेक्ट्रोमीटिव फ़ोर्स जो विजली की करण्ट का केन्द्र है बना रहता है, उसी प्रकार ईश्वर जो शक्ति का परम आधार है, सदा अविनाशी है।"

यह व्याख्या इस बात को स्पष्ट करती है कि करण्ट का अविनाशी आधार करण्ट की एक धार से अलग है। यही कारण है कि सन्तमत के दर्शन के अनुसार सारे विश्व को परम सत्ता की एक बूंद पर आधारित माना गया है।

इलैक्ट्रोमीटिव फोर्स को करण्ट से अलग बता कर फकीर बाबा ने यह स्पष्ट किया है कि सृष्टि का स्रोत एक दूसरे से अलग है। इसलिए ईश्वर, जो सृष्टि का आधार है और एक अनन्त शक्ति

है, सृष्टि में एक करण्ट के रूप में उपस्थित है, जैसे कि सूर्य इस पृथ्वी पर किरणों के रूप में उपस्थित है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि सूर्य की शक्ति की किरणें सूर्य का सूक्ष्म रूप हैं। इसी प्रकार सभी आत्माएं ईश्वर की दिव्य धारा का सूक्ष्म रूप हैं। इससे यह पता लगता है कि मनुष्य इस दृष्टि से ईश्वर नहीं है कि वह उसके समान अथवा उससे एक हो। जब तक मनुष्य देश, काल और कारण की सीमा में रहता है, वह ईश्वर से एक नहीं हो सकता। ब्रह्माण्ड की सभी चीज़ें, पृथ्वी, चन्द्र, सूर्य और अनेकों विश्व ईश्वर का एक अंश हैं। वे सभी ईश्वर पर उसी प्रकार निर्भर हैं, जिस प्रकार बिजली की करण्ट और मशीनें इलैक्ट्रोमोटिव फ़ोर्स पर निर्भर होती हैं। परन्तु ईश्वर किसी चीज़ पर निर्भर नहीं। सारे ब्रह्माण्ड की सभी वस्तुओं को मिलाकर भी ईश्वर के बराबर नहीं कहा जा सकता, क्योंकि सभी चराचर ईश्वर की शक्ति की एक बूंद से भी कम हैं।

राधास्वामी मत के संस्थापक श्री स्वाम

महाराज के पद्य की व्याख्या करते हुए फ़कीर बाबा ने लिखा है :—

"केवल एक ही बूँद सारे विश्व में काम करती है। बग़दाद में हम अपने दफ़्तर में एक ही बैट्री से आठ धारें निकालते थे अर्थात् हम एक बैट्री से करण्ट की आठ लाईनें निकालते थे। इसी प्रकार ईश्वरीय शक्ति को एक ही बूँद एक ब्रह्माण्ड बनाती है। हम यह नहीं जान सकते कि विश्व में कितने ब्रह्माण्ड हैं, कितने सूर्य हैं, कितने चन्द्र हैं, कितने सौर मण्डल हैं, कितनी आकाश गगाएं हैं, जिनमें अनेकों सौर मण्डल होते हैं। कोई भी व्यक्ति इस महान् विश्व को माप नहीं सकता।*

ब्रह्माण्ड को उत्पत्ति की यह सुन्दर व्याख्या भगवद्गीता के तत्त्व विज्ञान को और भी स्पष्ट कर देती है। फ़कीर बाबा द्वारा दिया गया उदाहरण

मानवता मन्दिर, अकतूबर 80, पृष्ठ 25

बहुत सुन्दर और सरल है, जो कि सब की समझ में आ जाता है।

यह बात ध्यान देने योग्य है कि फ़कीर बाबा ने ईश्वर के सच्चे रूप के आधार पर सभी धर्मों के एकत्व पर ज़ोर दिया है। विभिन्न धर्मों ने ईश्वरीय शक्ति की धार के आंशिक रूप पर ही ज़ोर दिया है। समुद्र की बूंद को उसका अंश तो माना जाता है, परन्तु समुद्र के बराबर नहीं माना जाता। अलग २ धर्मों के संस्थापकों, पैग़म्बरों और अवतारों ने समय २ पर पृथ्वी पर आ कर इस बात को याद दिलाने की कोशिश की कि ईश्वर का कोई पारावार नहीं पा सकता, ईश्वर की शक्ति के बाहरी रूप को कभी ईश्वर के बराबर नहीं समझो। किन्तु सभी धर्मों के अनुयायी हमेशा धार को आधार मान कर अर्थात् ईश्वर के बाहरी रूप को ही ईश्वर मान कर बड़ी भूल करते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि अलग २ धर्म पर चलने वाले अपने २ संस्थापक को भी ईश्वर मान लेते हैं और उसे सभी धर्मों के संस्थापकों से ऊंचा

मानते हैं। आम लोग ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे अपने धर्म संस्थापक के तथाकथित चमत्कारों से प्रभावित हो जाते हैं और चमत्कार के कारण उनका विश्वास केवल अपने ही धर्म में दृढ़ रहता है।

किन्तु लोग इस गूढ़ रहस्य को नहीं जानते कि चमत्कारों का सम्बन्ध ईश्वर के सच्चे रूप से न हो कर केवल उस सूक्ष्म स्वरूप से है, जिसे काल और माया कहा गया है। फ़कीर बाबा कहते है कि ईश्वर का सूक्ष्म रूप विचार है, जिसे सहस्त्रदल कमल कहा गया है। यही विचार अर्थात् मन मनुष्य में भी है। मनुष्य जब अपने मन को एकाग्र कर लेता है, तो वह चमत्कार उत्पन्न कर सकता है। यह चमत्कार दो प्रकार के हो सकते हैं।

१) बाहरी २) आन्तरिक

विज्ञान की खोजें और आविष्कार भी वैज्ञानिकों के सूक्ष्म विचार का ही फल हैं। यदि हम चमत्कारों का सही विश्लेषण करें तो हमें पता चलेगा कि

चमत्कार केवल उसी समय ही होते हैं, जब हमारा मन स्थिर होता है। यदि हम किसी समस्या पर वैज्ञानिकों की तरह अपने मन को एकाग्र कर लें तो हम किसी नवीन परिणाम पर पहुंचेंगे । वह नया परिणाम कोई वैज्ञानिक नियम अथवा आविष्कार हो सकता है । वैज्ञानिकों ने मन की एकाग्रता के कारण ही ऐसे २ भौतिक चमत्कार किये हैं, ऐसे तकनीकी आविष्कारों को जन्म दिया है, जो हमें लोक लोकान्तरों की खोज में आगे बढ़ा रहे हैं। मनुष्य के मन के अन्दर अनेक लोक लोकान्तर हैं; जिनकी अनन्त शक्तियां हैं। जब मनुष्य अपने ध्यान को अन्दर की ओर ले जाता है तो उसे विश्व और अपने सूक्ष्म रूप का पता लग जाता है। रोगों के दूर होने, ईश्वर या गुरु के रूप को देखने, पानी पर चलने, हवा में उड़ने और चन्द्र तथा सूर्य लोक आदि में सूक्ष्म शरीर द्वारा यात्रा करने आदि के जितने चमत्कार हैं, सभी मन के अन्दर के ध्यान के फल होते हैं। राजयोग में मन के आन्तरिक ध्यान द्वारा सिद्धियों को प्राप्त करने के तरीके

बताये गये हैं। जब मन को अन्दर ले जा कर ईश्वर के अथवा गुरु के रूप पर या किसी मन्त्र पर ध्यान लगाया जाता है, उस समय मन बाहर की चीज़ों से हट कर विश्व के सूक्ष्म रूप अथवा सहस्रदल कमल से जुड़ जाता है और वह तथाकथित चमत्कारों को पैदा कर सकता हैं।

अब प्रश्न यह होता है कि वे लोग जो मन की एकाग्रता को जानते तक भी नहीं, उन्हें फ़कीर बाबा की उपस्थिति का कैसे अनुभव होता हैं। इसका उत्तर बिलकुल सीधा है। आमतौर पर हमारा मन सदा इधर उधर भटकता रहता है, वह सदैव किसी न किसी विचार या वस्तु से सम्बन्धित रहता हैं। परन्तु जब कोई व्यक्ति बहुत ही दु:खी होता है, जब उसको अपने दु:ख दूर करने का कोई भी उपाय नहीं सूझता, तो वह मन को सब ओर से हटा कर प्रार्थना के द्वारा क्षण भर के लिए फ़कीर बाबा के ध्यान में लगा देता है और विश्वास करता हैं कि फ़कीर बाबा ही उसकी सहायता कर सकते हैं। उस समय फ़कीर

बाबा का शरीर प्रकट होता है और यह एक चमत्कार ही दीखता है। अधिकतर लोग इन चमत्कारों से इतने प्रभावित होते हैं कि वे इनसे परे नहीं जा सकते। वे समझते हैं कि उनकी सहायता किसी बाहरी शक्ति ने ही की है। अपने २ धर्म के प्रभाव के कारण, वे ईश्वर के जिस रूप में विश्वास रखते हैं, केवल उसी को ही सच्चा मानते हैं और दूसरे धर्मों को झूठा समझते हैं। इसी अन्ध विश्वास के कारण ही समाज हज़ारों मत मतान्तरों में बंट गया है और धर्म के नाम पर संसार के इतिहास में जितने अत्याचार हुए हैं उनको याद करके मन कांप जाता है। फ़कीर बाबा ने अन्ध विश्वास को मिटाने के लिए यह भेद खोल दिया है कि चमत्कारों का कारण कोई बाहरी शक्ति नहीं बल्कि मनुष्य का अपना ही मन या विश्वास है।

सत्य तो यह है कि मन के विश्वास के कारण ही चमत्कार घटित होते हैं, चाहे वह विश्वास किसी व्यक्ति में हो अथवा देवता में हो। जब चमत्कार घटित होता है, तो अनुभव करने वाला इस भ्रम में

किसी भी मनुष्य की सभी इच्छाएं हर समय पूरी नहीं होतीं। जब ऐसे व्यक्ति जो अचानक चमत्कारों का अनुभव करते हैं, उस समय तो प्रसन्न हो जाते हैं, परन्तु जब कभी उनकी इच्छाएं पूरी नहीं होतीं तो उनका अपने विशेष देवता या गुरु से विश्वास उठ जाता है। मनुष्य को सच्ची शान्ति और सच्चा ज्ञान तभी मिल सकता है, जब उसका मन पवित्र हो। ईश्वर व गुरु के रूप में केवल अन्ध विश्वास रखने से मन की पवित्रता नहीं आती। इसलिए मनुष्य को चाहिए कि वह योग; समाधि, ध्यान इत्यादि का अभ्यास चमत्कारों का अनुभव करने के लिए नहीं बल्कि मन की पवित्रता को प्राप्त करने के उद्देय से करे। मन की पवित्रता मानव धर्म के नियमों का पालन करने से आ सकती है।

जब व्यक्ति चमत्कारों से ऊपर उठ जाने के लक्ष्य को सामने रखता है, जब वह ऐसी घटनाओं को साधना का जरूरी अंग नहीं मानता और जब वह मानवता धर्म मन की शुद्धि के लिए करता है, उसे चमत्कारों के रूप का सच्चा ज्ञान हो जाता है तो उसकी तथा कथित चमत्कारी घटनाएं

अचानक घटित नहीं होती वे वास्तविक प्रकार की होती है। यही करण है कि संसार के हर कोने में सन्तों के सम्बन्ध में रोगों के दूर होने और भवित्य आदि की घटनाएं घटित होती रहती हैं। सच्चा सन्त वही होता है, जिसको चमत्करों के वास्तविक रूप का ज्ञान होता हैं। वह जानता है कि तथा कथित चमत्कार सभी ईश्वर के कारण ही घट रहे है वह तो केवल निमितमात्र ही है। जब कोई महात्मा अथवा सन्त चमत्कारों से प्रभावित न हो कर मनुष्य के परम लक्ष्य को ही अथवा धर्म समझता है, वह स्वयं भी पूर्णता को प्राप्त करेगा और साथ ही साथ दूसरों को भी पूर्णता की ओर ले जायेगा। ऐसे योगी जो लोगों में नाम पाने के लिए या धन कमाने के लिए या लोगों को चमत्कार दिखाने के लिए साधाना करते हैं वे कभी जीवन मुक्त के लक्ष्य को नहीं पा सकते। फ़कीर बाबा ने किस प्रकार चमत्कारों से ऊपर उठ कर जीवन मुक्ति के स्तर को प्राप्त किया है, इसकी व्याख्या अगले अध्याय में की जायेगी।

	To Building Repairs &		
5,106-40	Maintenance		6,053-10
4,924-39	To General Repairs Charges		4,494-08
6,360-05	To Electricity Charges		10,509-40
2-00	To Bank Charges		3-60
13,561.88	To Satsang Charges		13,177-70
	To Garden & Water Supply		
574-09	Charges		889-80
1,006-69	To Sanitation Charges		994-15
4,315-20	To Miscellaneous Expenses		2,446-53
	To Dispensary Charges		
3,807-53	Medicines :—		4,266-19
		20.40	
		796-00	
		3449-79	
		4,266-19	
79,404,01	Fre Eye Hospital Medicines		86,498,5
	To Publication		24,273-20
	To Depreciation Written off :		
2,679-10	Furniture	2800-41	
970-33	Library Books	657-75	
12,196-00	Building	15377-51	
419-00	Library Equipments	378-00	
	Eye Hospital		
3,841-00	Buildings	3649-00	
955-49	Sanitary Buildings	1664-52	
375-00	Electric Equipments	387-53	
950-80	Medieal Equipment	855-00	
508-00	Tubewell	457-00	

285-00	Tape Record		
349-10	School Electric Fitting	314-00	
6,538-51	School Building	6211-00	
1,431-36	School Equipments	1374-00	
3,601-71	Machinery	5412-38	
284-47	Press Furniture	256-00	
	Type Printers	2506-29	42,543-39
			70,054-51
1,63523,18	To Balance (Excess of Income over expenditure)		
4,61,300-72			4,66,689-89

Internal Auditors **Secretary** **President**

D. Kumar

Dated : 10-4-1981

Camp : Hoshiarpur

सूचना

मानमता फ्री आई. व. एलोपैथिक हस्पताल मानवता मन्दिर हौशियारपुर में बड़े योग्य डाक्टर श्री मनजीन सिंह जी की सेवा की व्यवस्था की गई है जिन के प्रमाण पत्र यहां छापे जा रहे हैं इन की सेवा से लाभ उठायें।

के. ऐल. जोड़ा
एम. एस. इ. पी. एच. डी.
यूनीवर्सटी प्रोफैसर रीटार्ड
शास्क मानवता मन्दिर होशियारपुर।